कब होता है अल्ज़ीमर?

डॉ. नरेश पुरोहित

यह तो साफ है कि अल्ज़ीमर रोग कुछ लोगों को अपेक्षाकृत ज़्यादा आसानी से अपना शिकार बनाता है। इन जोखिमग्रस्त समूहों की पहचान और इसके पीछे छिपे कारणों की खोज अल्ज़ीमर रोग के उपचार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम होगा। और शायद यही इस रोग से बचाव के उपायों की टोह दे जाए।

उम्र

अल्ज़ीमर रोग के कारकों में ढलती उम्र एक बहुत अहम घटक है। एक सामान्य व्यक्ति के 60 वर्ष की आयु से पहले डिमेन्शिया (एक प्रकार के उन्माद या मनोभ्रंश) से प्रभावित होने की सम्भावना अति क्षीण होती है। जबकि 65 वर्ष की उम्र से अधिक के लोगों में औसतन हर 20 में से एक व्यक्ति और 80 वर्ष से ज़्यादा उम्र में औसतन पांच में से एक व्यक्ति के इस रोग से पीड़ित होने की सम्भावना है।

बढ़ती उम्र हमारे जोखिमों को कई तरह से बढ़ा सकती है। जन्म के साथ ही मानव मस्तिष्क में कोशिकाओं का धीरे-धीरे क्षय होना शुरू हो जाता है। यही कारण है कि ज़रूरत पड़ने पर वृद्धों के पास जमा कोशिकाएं नहीं होती हैं। जिस तरह हमारे बाल सफेद होने लगते हैं और चमड़ी पर झुर्रियां आने लगती हैं वैसे ही हमारी बची हुई मस्तिष्क की कोशिकाएं भी बूढ़ी होती जाती हैं। शायद इसीलिए किसी तरह की क्षतिपूर्ति करने और अहम कामों को करते जाने की उनकी क्षमता घटती जाती है।

हमारे वातावरण में कुछ ऐसी चीज़ों की उपस्थिति की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता जो युवा मस्तिष्क को तो प्रभावित न करती हों लेकिन वृद्धों के लिए खतरनाक साबित होती हों या फिर दिमाग में काफी खतरनाक स्तर तक इकट्ठी हो जाती हों। वृद्ध लोगों का हृदय और रक्त संचार सम्बंधी रोगों से पीड़ित होने का अंदेशा भी ज़्यादा रहता है। इससे भी मस्तिष्क कोशिकाओं में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

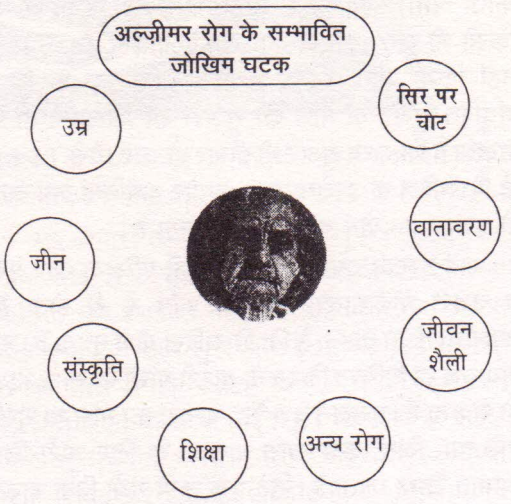

हमारे वातावरण में कुछ ऐसी चीज़ों की उपस्थिति की सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता जो युवा मस्तिष्क को तो प्रभावित न करती हों लेकिन वृद्धों के लिए खतरनाक साबित होती हों या फिर दिमाग में काफी खतरनाक स्तर तक इकट्ठी हो जाती हों। वृद्ध लोगों का हृदय और रक्त संचार सम्बंधी रोगों से पीड़ित होने का अंदेशा भी ज़्यादा रहता है।

यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है कि क्या अधिक दिनों तक जीने से हम सबको अल्ज़ीमर रोग हो सकता है? इस प्रश्न पर शोधकर्ताओं के भी मत स्पष्टतः विभाजित दिखाई पड़ते हैं। मसलन कैम्ब्रिज में एडनब्रूक्स अस्पताल के मनोवैज्ञानिकों और तंत्रिका वैज्ञानिकों के एक दल के अनुसार सतत क्षय होना (जो कि बुढ़ाने की सामान्य प्रक्रिया का एक हिस्सा है) का अपरिहार्य अंत है